

क्रियां च निश्चयं धर्मादाया सरुल्ल ॥ २७ ॥ धर्मकर्मविहीनस्य दिनयागिच विविक्षां । सवांका
 कालवस्तुस्य स्वयं वयडीयमेव ॥ ॥ धर्मसत्यमदाया दिनवर्नं अक्रियान् धृशय
 व त्वरु कालया वस्तुथ य मथयतीव वर्यं विना सदायुवरा ॥ २८ ॥ जग
 नुपि सुल्लवाद्या दाषावाद्या नलेव पिश युकायुक् चवागुमेधं नवत्रागुव
 मेवया ॥ ॥ लफया इवम नां सुल्लकाय द्वाय मिगया इवमनां दाषल्लका
 यद्वग्य इकि सुल्लिया द्वाय दनं माल गुवृद्यागकान अयुक्कि द न्नाकाय मगवरा ॥ २९
 ॥ अस्याल्लवाल्लविद्या अस्याल्लधनसंयदा । अस्याल्लवेद्यल्लमुदि अस्याल्लसिद्धिसम्पदा ॥

44

कालं वनिष्यतः संधि, कालं वनिष्यति यदा कार्या कर्तव्या मास स्व कालं
 परिगच्छति ॥ कालं सप्तमं वा संधियाय कालं समिप्यता विद्युदंशू का
 यया रुधुधान कालं नय
 लसं हवग पुकाश कालं सूर्य
 नयानिया क वनिष्य काल
 कासं जागव यथान धार्थिक काल या लक मज्जिव ॥ २ ॥ काला ल्य ला धिर्गदीर्घ
 रुत काला ल्य वरुग ॥ वलयवक्तु रुदि मनु काला यि सरुल ॥ काल या क

४०

नानं पृथय कालं दान रुदि या य काल न भाव कय ॥ ३ ॥ खदि ॥ मरुमि
 लाय ॥ वन्दु काने वम वन रा सर्व के वा य काल ॥ म सा द्वा व म रु र्ग ॥
 आ काश दिग्म रुथी विल
 काल न भाव को व धनः
 निव क्रा व ॥ अना य न
 किं क वि शनि ॥ कृ या यि द्वा या या व वन ग्वन धू थ य स रु द म द ल वृ वि
 वि शो द न म रु य न क ग्र म स व रु म मा ल य न र्मिल द्वा य ॥ ५ ॥

कदलिवनमधस्कं वक्रिमन्दपराकुमराश्रुविवकजनस्कनं गुणावा-
 किंकविद्यति॥ कलिलवनसंभङ्गयत्कं कलिवमङ्गाव विवावमङ्ग
 नवाधायसं गुणावन्तः कसङ्गा ७ ॥ यत्तयहितमङ्गादाः
 तवन्तिकिलसागर॥ सागरादंमङ्गति यत्तयापिनसाधः
 न॥ यत्तयसंसमृद्धनम र्यादा मधववयवी साधुजनयत्तकाया
 सागररुदयाय मयव यत्तयकालस॥ ८ ॥ भवृण्वलीनकल्यान्क मया
 देसागलस्यव प्रनियन्तमहासत् नवननिकदावन ॥ कल्यान्कसः

मस्यकृष्णतलं॥ श्रीस्वन्दं जितव वेदेमां जीतली वरुमा वा श्रीस्वधुमा
 निरुदिस साधुजनवा नायाताय अग्निनी जीतल॥ १३ ॥ अथुनाधनः
 मिङ्गति श्रीनिमिङ्गनि मधमाहा उरुमा मानिमिङ्गनि मन
 हिमरुताधन॥ अथनि नवनियाय प्रियय मधमा उरुमा
 भौजनमानियाय साधु सरुयायुव॥ १४ ॥ मिङ्गिका प्रनमिङ्ग
 नि श्रीनिमिङ्गनि मधमाहा उरुमा मानिमिङ्गनि मनादिमरुताधन॥
 अथनिन वनयाय प्रियय मधमा उरुमजनमानयाय

मन्त्रिकापुनर्मिच्छन्ति धनमिच्छन्ति या विवाः। नीचाकनरुमिच्छन्ति सां
 न्तिमिच्छन्ति या धवाशा॥ ताडिनि धावसं ॥ १०॥ रुयु नीच ॥ लायसं ॥ ११॥
 रुयु नीच ॥ लायसं ॥ १२॥ रुयु सोधु ॥ लायसं ॥ १३॥
 यिन वावर्थमिच्छन्ति रुयु मिच्छन्ति दामिकाः ॥ १४॥ रुयुः कलमिच्छ ॥ १५॥
 नि सन्तमिच्छन्ति यायसा ॥ १६॥ रुयुः कलमिच्छ ॥ १७॥
 रुयु वा ॥ रुयु यायु मसमा मावायनि स्य ॥ १८॥ रुयु वा ॥ रुयु यायु
 यवा रुयु यायु सन्तमिच्छन्ति यायु ॥ १९॥ रुयु वा ॥ रुयु यायु

सूत्रे ॥ यवपिदा वा यायुति नेव साधु विद्यते ॥ अग्निदुःखन धनवाय अ
 तिलाहन सूत्रवाय मवयागा विदाविय थनयाक साधु याक मय ॥ २०॥
 ॥ अस्य नातरया ह्य अ कार्य नेव कावेम ॥ २१॥ सूत्र काथ न कुर्या
 व निरुल नेव काथय ॥ २२॥ हानिद्वन मरु या गुरी स आन रुमय
 क अकार्य मया क विक् ति कार्य याय अया ह निरुल गुलि स
 वनय मयव ॥ २३॥ लेल लेल न मानिच्छ मोकि कन गऊ गऊ ॥ साधवा
 नहि सर्वं वनन वनवन ॥ २४॥ यन्मयनि मानिच्छ मयु कि सि यति मति

मद् साधकस्य मय पुयतिं श्रीस्वस्त्यु मद् ॥ २० ॥ यवकार्यस्य का
 मा स्वकार्यो विविधसाधनैः सहकार्यसु निवृत्तिं राजकार्यसु विवृत्तमः
 ॥ भवया कार्यसु हनुतिथी या कष्टं यवकार्यसु नतिनसाधनय
 मया कार्यसु निवृत्तययी य राजा या कार्यसु वनया य ॥ २० ॥ ३ ॥ ४ ॥
 लक्षणेन निवृत्तौ यन्तु नै गत्यद् व्यक्तं अचलमयि साधनं मिः
 लेखेन विनिवृत्तं ॥ नीवृत्तयादा कार्य लेखस्य साधकदाथो जन्तु नै सः
 यमद् साधकननयादा कार्य वनवयमद् लाहासवायाथो ज्ञानिव

॥ २१ ॥ मरुतासाद्यदः सन्ति मरुता मयि सप्तदश दूतज्ञवमनुष्यायुना
 यदाने वसन्ति ॥ नवया कृपया नव संयतिनव तासनया आयदा
 मद् सयतिमद् ॥ २२ ॥ स मृष्टयानि यकुल वमुलायववृ
 मा ॥ विष्णुः सवर्णमाकुल मरुता कवसंयुते ॥ महादवसन्तु
 स्याय अकृपाकुन वृत्त मा संतु स्याय वस्तुलायन विष्णुसः
 सुसुयाय सुमन्त्रयादान नवयुयसन्तु स्याय हाथजवयाय ॥ २३ ॥
 ॥ लेखकयाथ कथित यवान्येन सुविनि काश सर्ववसनिना मरुता ॥ किं

यावन्मध्ययति नरा॥ वाक्यं यदयं द्वाभ्युसवयविं धसमस्तं वसनि
 दाहं मयं क्रियाकर्म याक क्रियावन्मयति नरा॥ २४॥ वाहितं अथवा
 निकं गंडमवा नयावन १॥ कीवावत्ताविकुर्वन्ति कामवा १६
 चिवाकक १॥ वाहनव निजाय सत वनिजाय वाजसवा १७
 यावन धन कानि धीः २३॥ वडन यनिस्यं तु रुवया यव काम
 नयनिस्यं द्वाष्टयायव ॥ २५॥ वडन नार्थनानि र्क विद्याथिन
 वडन नार्थनानि र्क विद्याथिन
 वडन नार्थनानि र्क विद्याथिन

दि०
 नर वायावयाय विद्याथिन अंकना कुटुनिव युगाथिन अहुकावम १॥
 नमनयाय मानार्थिनाक सडाया ॥ २६॥ मयय मय दलाकार वावावद
 पली गले १॥ दहिले सुनि १॥ दहिले सुनि १॥
 पलिंथा कामववव न प्रीखुथा गीगले नुगल कलरिथा
 नका धुल्याल दला ॥ २॥ न॥ दुरुन विववादीव नवविष्वाभाका
 मयप्रवकिदि छाव रुदिरुला रुले विव ॥ २॥ दुरुन रुय यका नरु
 विष्वास मयाद कलिभवा सतयाथी नगल सरुला रुले याया विथं
 धान दाकर्ति १॥

॥ स्वल्पं सर्वं यमा जानि यमद्विद्वानियत्यनि । अस्मना विनु
 न, यत्न्यत्ययिनयत्यनि ॥ इह न न मे व यमद्विद्व, जका या य मंद, थ
 नमा, शास्त्रा या य मंद ! मस्तदा कुरुयु ॥ ३० ॥ दर्शनीया त्रय
 धनवन्मन्यनिर्मुक्त
 धकाः ॥ ग्वनमूर्ध्वद्विद्व
 सना, सायुवर, लाहा वाहा स्य वा द्वा ॥ ३० ॥ मूयायि य विद्वत्तया
 वयक्का विद्वत्तया, लिप्यं वाक्का गल्लन, अहं कुरु कुरु यथा ॥ ३० ॥ मूर्ध्वः

मनिवत्तन, सुयलयात नानसर्ग, सया वी मस्तदा यवा थथी दुरुन
 गालममात्त ॥ ३० ॥ याया यगुतिसयन, धन्यपन्नयथा यथा । ननानिः
 प्रवर्गकीर्ष, कीर्षा सिद्ध
 यदत्त साया कुरुद्वद्व
 कुरुद्वयु विमिसत्ता नाय
 ॥ कुरुद्वजन माध्वस्य, वास, यास, यगु रुकथ्य
 नयवासी वनिव ॥ ३० ॥ यद्वी कुरुकुरु द्वाया, आनिमि मेवयि गः

न। नतं कानन वषाठव, कुरुस्थानकनविद्युत ॥ यावया, दासन, लूना ॥ ३
 मियुमियायाक, वयगा ५० कानयाक, लनकिता २०० खत्रयाक
 धूमियाक, थविडाविः ॥ ३१ ॥ स्तानकनमदुवा
 चाले, भेगुसिदयवित्त ॥ ३२ ॥ विष्वासयकार्य, विनासययः ॥ ३३
 गच्छति ॥ ३४ ॥ धानसयाक ॥ ३५ ॥ यमिदुवाथाविना, मिदुवात, सनेम
 मानकमान, कानकावसा, विष्वासयागदासी, कार्य, नाग, रुय, रुव
 ॥ ३६ ॥ मृदुनेवमृदुहनि, मृदुनाहनि, दावुन, नासाथमृदुकिवि